कोरियर का कमाल

नीलिमा तिवारी का विवाह उसके मन पसन्द युवक राहुल शर्मा के साथ बहुत ठाट-बाट-शान-शौकत व गाजे-बाजे धूम-धड़ाकों से महंगे खर्च पर हुआ था। दूल्हा-दुल्हन की जोड़ी भी बहुत खूब, अच्छी आकर्षक लग रही थी। नीलिमा बड़े बाप की बेटी सुन्दर शिक्षित व अच्छी कद-काठी की आकर्षक युवती थी। नीलिमा दुल्हन बनकर शादी के बाद जब ससुराल पहुंची उसका गृह प्रवेश भी स्वागत का अनूठा विषय बन गया। घर के परिवार जनों के अलावा आसपास पड़ोसियों व अन्य लोगों ने नीलिमा के रूप-रंग-लावण्य को खूब सराहा। राहुल शर्मा अपनी पत्नी की प्रशंसा सुनकर गर्व से फूला नहीं समा रहा था। नीलिमा ने सबका मन मोह लिया था। शीघ्र ही वह सबकी प्रिय चहेती बन गई थी।

घर में रस्मो-रिवाज लगभग पूरे दिन चलते रहे। शादी वाले घर का माहौल सुखद था। हंसी खुशी ठिठोली मजाक मनोरंजक रोमांटिक वातावरण था। दिन ढला शाम धुंधलायी। शनै-शनै रात का आगमन होने लगा था। सजे धजे कमरे में श्रृंगारित नई-नवेली दुल्हन फूलों की सेज पर बैठी थी। सब कुछ सुन्दर बहुत ही सुन्दर था। नीले आकाश पर तारे आंख मिचौली खेल रहे थे। घड़ी के कांटे आगे-आगे टकटक की आवाज के साथ बढ़ते जा रहे थे। दुल्हन नीलिमा का दिल बैठा जा रहा था, वह सोच रही थी उसका पति न जाने कैसा बर्ताव करेगा? वह उसके आने का कयास लगाने लगी, आयेगा, आयेगा आने वाला आयेगा...।

और आने वाला वहां आ गया। हंसते मुस्कुराते चेहरे के साथ दुल्हन के कमरे में राहुल आया। अंदर का दरवाजा उसने बंद किया खिड़की की चिटकनी लगाई। धीरे-धीरे वह नीलिमा के पास सुहाग सेज तक पहुंचा। उसका घूंघट उठाया नीलिमा ने अपनी निगाहों को शर्म से नीचे कर लिया। वह बोला आसमान का चांद धरती पर उतर आया है तुम सचमुच बहुत ही खूबसूरत हो नीलू। पति हूं तुम्हारा फिर शर्म कैसी? तुम जैसी पत्नी को पाकर मैं गर्व से अभिभूत हूँ। तुम्हारे बगैर अब मैं एक दिन तो क्या एक पल भी नहीं रह सकता। आई लव यू। बहुत प्यार करता हूँ।

नीलिमा अपने पति की बांहों में सिमटी जकड़ी उस वक्त सोच रही थी कितना अच्छा प्यार करने वाला मेरा पति है। राहुल की बात का उसने जवाब नहीं दिया। वह बोली- राहुल सचमुच तुम कितने अच्छे हो। सच कह रही हो- हां- राहुल जी। हलके से मुस्कुराकर वह बोली। सुहानी यादगार रात, वह सुहागरात कब कैसे कट गयी उन दोनों को पता भी नहीं चला। दोनों पति-पत्नी बहुत खुश थे।

सुबह प्रभात बेला में वे दोनों जाग गये। नित्य कर्म, नहाने से फारिग होकर निपटने के बाद अपने व्यक्तिगत कार्य में लग गये। परिवार के लोगों, रिश्तेदारों से, शादी वाला वह घर भरा था। घर का माहौल रोमांटिक, हंसी मजाक, ठिठोली से भरा था। गाना बजाना, महिलाओं का संगीत चल रहा था। नाच भी हो रहा था। चाय नाश्ते के बाद सभी मेहमानों के लिये स्वरुचि भोज की व्यवस्था होने लगी। नीलिमा उसके कमरे में आदम कद शीशे के सामने श्रृंगार करके तैयार होने लगी थी। बाहर के बैठक वाले कमरे में राहुल शर्मा उस दिन का ताजा अखबार पढ़ने में लीन था। तभी बाहर के दरवाजे से आवाज आई कोरियर...। उसकी आवाज सुनते ही राहुल शर्मा उसके पास आया और पूछा किसके नाम है और कहां से आया है?

कोरियर यह मैडम नीलिमा तिवारी का है और अर्जेन्ट पार्सल। भेजने वाला सेन्डर है कोई किशोर माली। बुलाइये साहब नीलिमाजी को ही दूंगा, वही दस्तखत भी करेगी। कोरियर बॉय बोला।

राहुल शर्मा ने अखबार को सहेज कर एक तरफ रखा और फिर बोला- अरे यार कोरियर वाले भैया लाओ मैं ही ले लेता हूं, दस्तखत भी मैं कर दूंगा। नीलिमा अभी बिजी है मेरी बीबी है वह। और उसने दस्तखत करके वह लिफाफा कोरियरबाय से ले लिया। राहुल ने लिफाफा लेकर खोला नहीं और अंदर क्या लिखा उसमें देखा भी नहीं। पत्र हिफाजत से अपनी जेब में रख लिया। केवल भेजने वाले का नाम ही पढ़ा, जो किसी किशोर माली ने भेजा था। उसकी पत्नी नीलिमा के नाम।

कोरियर लेते ही तन-बदन में राहुल शर्मा के आग लग गई। क्रोध से उसका चेहरा तमतमा गया, सोचने लगा अगर सामने किशोर आ जाए तो वह उसका कत्ल कर देगा। कोई भी व्यक्ति नहीं चाहेगा कि उसकी पत्नी किसी गैर मर्द से संबंध रखे। राहुल का सोच भी कुछ इस प्रकार का ही था। संदेह के जहर का कीड़ा उसके दिमाग में कुलबुलाने लगा। उसने शादी से पहले सुन रखा था कि नीलिमा की, शादी के पहले विश्वविद्यालय के किसी किशोर के साथ मित्रता थी।

राहुल शर्मा हलकान होकर नीलिमा के पास पहुंचा और भभक उठा। उसने गरज कर पूछा क्यों नीलिमा यह किशोर कौन है? उसका प्रेम पत्र कोरियर से आया है। शादी हुए चार दिन भी नहीं हुए और कोरियर आने लगे। शादी तो मेरे से की और प्यार उस किशोर से वाह, वाह री चालबाज औरत। इतना बड़ा धोखा-फरेब मेरे साथ। ऐसा ही था तो कर लेना थी उसी किशोर से शादी। तुम चरित्रहीन हो। ऊपर से गोरी अंदर से काली। धोखेबाज...।

बस चुप भी रहो। बहुत बोल लिये हो। बेकार की फालतू बकवास करने की जरूरत नहीं। नीलिमा ने कहा- चाहे जैसा झूठ बोलते जा रहे हो? कुछ तो शरम करो।

अरे वाह। नीलिमा चोरी और सीना जोरी, तेरा झूठ पकड़ा गया है। राहुल ने कहा। उसी यार के पास चली जाओ जिसका कोरियर आया है। एक स्त्री का कोई पुरुष दोस्त? वाह वाह। आज, इसी वक्त तुम मेरे घर से निकल जाओ। दफा हो जाओ। समझ लो मैं तुम्हारे लिये मर चुका हूं। मैं एक पल भर भी तुम्हारी सूरत देखना नहीं चाहता। और वह जोर-जोर से पांव पटकते हुए कमरे से बाहर चला गया था।

नीलिमा सोच भी नहीं सकती थी कि कोरियर का ऐसा कमाल देखने को मिलेगा। वह कोरियर उन दोनों पति-पत्नी के हंसते-खेलते जीवन में जहर घोल देगा।

अपमानित-बेइज्जत होकर निर्दोष नीलिमा को ससुराल को छोड़कर जाना पड़ा। राहुल शर्मा क्रोध में जल रहा था। यहां अब कभी मुंह मत दिखाना और विवश, लाचार नीलिमा अपना कुछ सामान समेटकर वहां से चल दी। अपने माता-पिता के घर।

जाते समय नीलिमा की आंखों से आंसू गिर रहे थे। परिवार के लोगों ने भी उसको जाने से रोका नहीं। परिस्थितियां उसके खिलाफ बन चुकी थी। पति राहुल शर्मा ने कह दिया था, नीलिमा समझ लो मैं आज से तुम्हारे लिए मर चुका हूं।

विक्रम विश्वविद्यालय हिन्दी अध्ययनशाला में साथ-साथ पढ़ने वाले किशोर और नीलिमा तिवारी के संबंधों के तार जुड़े जो एक स्वाभाविक सुयोग रहा। वह गरीब पिछड़े वर्ग का लड़का किशोर माली द बेस्ट स्टूडेन्ट था। अत्याधिक परिश्रमी, विनम्र, सहज सरल, आज्ञाकारी और पढ़ने में ठीक-ठाक। सभी का चहेता।

नीलिमा तिवारी धनाढ्य बाप की इकलौती पुत्री, पढ़ने-लिखने में तेज तर्रार। बेहद लावण्यमयी कोई एक मर्तबा भी उसे देख ले तो निगाहें नहीं हटे। घमंड बहुत अपने आप पर। उसका मेल-जोल बढ़ा किशोर से तो बढ़ता ही गया। वह कभी उसकी गरीबी कपड़ों के पहनावे का मजाक उड़ाती तो कभी पढ़ाई में भी उसकी गलतियां निकालती। लेकिन फिर भी किशोर कभी उत्तेजित नहीं होता और न कभी नाराज। किशोर का नीलिमा तिवारी के प्रति सदैव बहुत आदर भाव रहता। नीलिमा तिवारी उसको देखकर अनुभव करने लगी थी कि जो गरीब है, पिछड़े वर्ग में आता है, उनके हृदय में ईश्वर का वास होता है। वे श्रेष्ठ मनुष्य होते हैं और अमीरों के हृदय में पाप कुण्ड भरा रहता है। कहते हैं सच्चे प्रेम का प्रथम चरण आकर्षण से ही आरंभ होता है। नीलिमा और किशोर के परस्पर आकर्षण की शुरुआत भी ऐसी ही थी।

किशोर एकान्त के क्षणों में जटिल किताबी समस्याओं को नीलिमा से जाकर पूछता था। एकदो बार वह नीलिमा के घर भी गया था।

नीलिमा अपने चरित्रकी उज्वलता का हमेशा ख्याल रखने वाली समझदार सयानी छात्रा थी। अपने भले-बुरे की चिन्ता उसको हमेशा रहती थी। किशोर उसका अच्छा विश्वसनीय दोस्त था, चरित्र के मामले में किशोर भाटी खरा सोना था। उसके बाद नीलिमा का विश्वास किशोर के लिये अधिक बढ़ चुका था। वह उसका हितैषी मित्र और सहयोगी था।

इन्हीं दिनों की मित्रता के चलते एक दिन केन्टीन में काफी पीते-पीते नीलिमा ने किशोर से कहा- किशोर तुम मुझसे कुछ कहना चाहकर भी नहीं कर पा रहे हो, तुम कुछ छिपा रहे हो। वह बोला जब दिल में कुछ है ही नहीं और होना जाना भी नहीं तो मैं क्या छिपाऊंगा। नीलिमा बोली जो बात तुम्हारे दिल में, है वही मेरे में भी लेकिन विवशता तुम डरपोक हो। हम दोनों की शादी पर तुम्हारा क्या कहना है? फैसला तुम्हारे हाथों में है वरना....।

किशोर ने कहा- नीलिमा मुझसे तुम ज्यादा जानती समझती हो। मेरा अस्तित्व क्या है, मैं कौन जाति से हूं। तुम्हारा स्टेटस, जाति उच्च कुलीन पूज्यनीय होना ही समस्या है। तालमेल कैसे संभव है? सच सच होता है, सच कह देने से मन हल्का हो जाता है। सामाजिक मर्यादाएँ ऊंच नीच बड़े छोटे लोग रीति रिवाज परम्पराएं आज भी कायम है और इतनी मजबूत है कि तुम्हारी और मेरी शादी हो जाने की बात तो अलग शायद हमारे पवित्र रिश्ते मित्रता के लम्बे समय तक चल नहीं सकेंगे। मान लो मेरी इतनी सी महत्वपूर्ण बात को, जैसा चल रहा है वह अच्छा है।

किशोर तो तुम सुन लो मेरे विवाह की बात चल रही है। क्या तुम्हें मंजूर है। होने वाला मेरा पति मारूति शोरूम में मैनेजर है। किशोर ने सुना तो एकपल के लिये उसको लगा पांव के नीचे की धरती निकल गयी हो। और उसमें वह धंस गया हो। उसका चेहरा उतर गया।

नीलिमा ने कहा अरे पगले यह क्या? गलत है ऐसा दुख मत मनाओ हमारा जो पवित्र रिश्ता है वह कायम रहेगा मित्रता-दोस्ती। मेरी शादी तो होना ही है और वह भी राहुल शर्मा से तयशुदा समय में।

किशोर ने कहा जाते-जाते नीलिमा। जो चुप रहकर सह लेता है, उस पर सभी अत्याचार करते हैं। फिर कारण चाहे कुछ भी हो।

और फिर वह मौका आ गया जब नीलिमा की शादी राहुल शर्मा के साथ पक्की हो गई। शादी के आमंत्रण कार्ड के वितरण का काम तुरत-फुरत शुरू हो गया। किशोर को भी नीलिमा तिवारी ने आमंत्रण भेजा। किशोर को एक झटका सा लगा उसको सच्चा प्रेम था नीलिमा से। उसकी हालत कार्ड पढ़कर किसी बुझे हुए दीपक की भांति हो गयी थी। उसको दुख हुआ पश्चाताप भी, काश मैं निम्न जाति का न होता।

नीलिमा की राहुल शर्मा के साथ उसकी मरजी से होने वाली शादी का आमंत्रण कार्ड जब किशोर को मिला तो किशोर ने अपनी आत्मा से नीलिमा को बधाई शुभकामनाएं कोरियर से प्रेषित की।

वही लिफाफा कोरियर के माध्यम से किशोर भाटी ने भेजा था, जिसको गलत समझकर नीलिमा को नीचा दिखाने के लिये बहुत संभाल कर हिफाजत से राहुल शर्मा के अपने पास रखा था। मौके व मौके वह उसका इस्तेमाल करना चाहता था। एक पत्र ने राहुल से नीलिमा को दूर कर दिया था।

राहुल शर्मा द्वारा अपमानित किये जाने के बाद नीलिमा अपने माता-पिता के घर चली गयी थी। दो वर्ष का समय उसने वहां एक शादीशुदा औरत होकर भी विधवा जैसा काटा। नीलिमा अपने दिल में से पति को निकाल नहीं पाई थी। उसके बारे में सोचकर वह चिंतित रहा करती थी। रात दिन वह उसी के संबंध में सोचा करती थी।

एक शादीशुदा इंसान के लिये पत्नी का सहारा जब नसीब में नहीं होता उसका दिल टूट जाता है। दोनों के रास्ते अलग-अलग हो गये थे। जैसे कोई शख्स पहाड़ की चोटी से नीचे घाटी में गिरकर एक ही बार में चूर-चूर हो जाता है, वही हाल राहुल शर्मा का हो गया था। राहुल का क्रोध शांत हो गया था। दोनों के रास्ते अलग-अलग हो चुके थे। जब एक बार दिल टूट जाता है तो जुड़ता नहीं। राहुल शर्मा ने सोचा नीलिमा से तलाक मांग लिया जाए। दोनों के हित में यही अच्छा रहेगा। हिन्दु लॉ कहता है तलाक के लिए पति-पत्नी का अलगाव दो वर्ष अनिवार्य है। तलाक का आधार भी वजनदार हो तर्क संगत।

तलाक का आधार प्रमाण था नीलिमा के नाम भेजा वह पत्र जो किशोर ने कोरियर के माध्यम से भेजा था। उसने लिफाफा को खोलने व पत्र को पढ़ने का सोचा ही नहीं था। उसने सोचा पत्र का अध्ययन किया जाए। पत्र को पढ़ा जाए। बस वही प्रमाण तलाक का आधार होगा।

लिफाफे को उसने फाड़ा अंदर से पत्र को निकाला और पढ़ने लगा। राहुल शर्मा हतप्रभ हो गया। पत्र में किशोर भाटी ने ऐसा कुछ नहीं लिखा था जो कोर्ट में पेश किया जा सके। बधाई-शुभ मंगल कामना और राहुल शर्मा की प्रशंसा के अलावा कुछ नहीं।

पत्र को पढ़ने के बाद राहुल शर्मा अपनी अज्ञानता पर पश्चाताप करने लगा। उसकी आत्मा उसको कोस रही थी। बेचारी नीलिमा पर उसने कितना जुल्म ढहाया। उसके चरित्र को ललकारा। उसका गुनाह यही था कि उसका सहपाठी उसका अच्छा दोस्त था। तो क्या किसी महिला का मित्र पुरुष नहीं हो सकता। कहां लिखा है पुरुष की मित्र दोस्त महिला नहीं हो सकती। इसमें गलत क्या है। रक्षा बंधन पर कोई भाई अपनी बहिन से राखी बंधवाये या बहिन राखी बांधे। रिश्ते तो पुरुष महिला के ही है। पुरुष का धर्म है स्त्री जाति का सम्मान करे। आदर करे। लेकिन राहुल ने तो सारी मर्यादाओं को तोड़ डाला था। उसको अपने आपसे घृणा होने लगी थी। पश्चाताप की आग में वह जल रहा था। **क्रमशः**

- डॉ. रामसिंह यादव

गतांक से आगे — धनकुल झूला राग सजाएं

एक टाकरी बरबट्टी का,
उसमें बैगन बास्ता खेकसी।
दूजा टाकरी कोचई भिन्डी,
राजू संवारता चिंगड़ी-सुकसी।।
बाट तराजू रुपए की थैली, बिक्री- बट्टा राजू रंगाएं।
वीर-पुत्र स्वाधीन भारत में, धनकुल झूला राग सजाएं।।

+++

बीस साल का राजू लगता,
वह पैंसठ का बूढ़ा है
बातों में उसकी गहराई,
मटर सेम का कुढ़ा है।।
कहता उसके हाथ में जादू, जीभ व्यवहार अमरिक बरसाएं।
वीर-पुत्र स्वाधीन भारत में, धनकुल झूला राग सजाएं।

+++

बिकरी -समापन, बोझा लेकर,
राजू लचक जब चलता है।
अच्छी अच्छी सब्जी बालियां,
राजू सबको तलता है।।
बास्ता बोड़ा लौकी टमाटर, मेहनत राजू का गीत गाएँ।
वीर-पुत्र स्वाधीन भारत में, धनकुल झूला राग सजाएँ।।

+++

भाग्य बनाना अपने हाथ है,
है प्रमाण परछाई साथ में।
बात चली है, श्रम साधन की,
जगन्नाथ का हाथ साथ में।।
चरैवेति चरैवेति है चलना, रेखाओं को ना भरमाएं।
वीर पुत्र स्वाधीन भारत में,धनकुल झूला राग सजाएं।।

+++

श्रम-शक्ति भक्ति को मारने,
रेखाओं के पर की कतरने।
लम्बे समय से शत्रु पग-पग,
रोज खड़ा होता है सामने।।
बड़ा हो गया है वह शत्रु, नाम नशा मदिरा को भगाएँ।
वीर पुत्र स्वाधीन भारत में, धनकुल झूला राग सजाएँ।।

+++

देश में मदिरा और मदिरालय,
इस भय से मौन-सचिवालय
काल-भैरव है जिसके समर्थक,
मौन उच्च सर्वोच्च न्यायालय।।
महाशत्रु के ग्रास बन रहे, सभी वर्ग से धू-धू चिताएं।
वीर पुत्र स्वाधीन भारत में, धनकुल झूला राग सजाएँ।

+++

मदिरा सम्मोहित विष-पान से,
इसके मांद में जो भी फंसते।
दिन-छित्तर परिवार सड़क पर,
मांदल जीवन असमय धंसते।।
मदिरा- मदिरालय से मुक्ति, युक्ति समाधान जन्माएं।
वीर- पुत्र स्वाधीन भारत में, धनकुल झूला राग सजाएँ।।

क्रमशः

-जोगेन्द्र महापात्र जोगी
जगदलपुर

फाइल और भूत

व्यंग्य

बाबूजी मेरी फाइल कब तक निपटेगी,' आखिर असहाय होकर मोडीराम उस बाबू के पास आकर गिड़गिड़ाते हुए बोला। बाबू ने उसे ऊपर से नीचे तक देखा, क्रोध से उसकी आंखें चढ़ी, फिर गुस्से से बोला तुम फिर आ गये?

'क्या करूं, आप चक्कर पर चक्कर दे रहे हैं,' गिड़गिड़ाते हुए मोडीराम फिर बोला।

'कहा, न फाइल का नंबर आने पर निपट जाएगी? कितनी बार से मैं यही कह रहा हूं, फिर भी तुम आ जाते हो।' बाबू उसी गुस्से से बोला।

मोडीराम कोई जवाब नहीं दे पाया। लाचार दृष्टि से बाबू को देखता रहा। फिर बाबू बोला- जानता है एक नई बात हो गई?

'कौन सी नई बात हो गई है' जिज्ञासा वश मोडीराम ने पूछा।

'जब से उस मंत्री ने भूत की बात कही, तुम्हारी फाइल को भी भूत खा गया।' कहकर बाबू ने उसकी तरफ देखा जिसके चेहरे पर मासूमियत झलक रही थी। फिर बोला- अब तुम्हारी फाइल को भूत से कैसे छुड़ाएं।

भूत, प्रेत निकालने का इलाज तो हुसैन टेकरी पर है। मोड़ीराम ने अपने सीधेपन से यह बात कही, तब बाबू का चेहरा प्रसन्नता से खिल उठा। फिर आगे मोड़ीराम बोला- तब उसे हुसैन टेकरी पर ले जाइये ना।

' मगर हुसैन टेकरी पर ले जाने के लिए खर्चा भी तो चाहिए।'

' कितना खर्च हो जाएगा।' मोड़ीराम ने प्रत्युत्तर में पूछा।

करीब 2000/- रूपये तो लगेंगे।

'तो बाबू जी जल्दी से ले जाओ।'

'खाली हाथ जाऊं क्या?' प्रश्नात्मक दृष्टि से बाबू ने पूछा।

' खाली हाथ क्यों, आप फाइल से भूत निकालने जा रहे हैं, अतः इंतजाम तो खुद को करना पड़ेगा।'

'अरे फाइल तेरी, भूत निकालने का खर्चा मैं करूं।'

'मगर भूत तो उसे आपके कार्यालय में लगा।'

' तो क्या हुआ फाइल तेरी है? गुस्से से बाबू बोला-खर्चा मैं क्यों उठाऊं।'

' क्योंकि जब मैंने अपनी फाइल दी थी-तब उसे भूत नहीं लगा था पर आपने उसे निपटाने में कई महीने लगा दिये, अतः भूत लग गया। यदि जल्दी निपटा देते तो यह भूत नहीं लगता। इसमें सारी गलती आपकी है। अतः उसका भूत आप ही को निकालना है। कहकर मोड़ीराम ने अपना सारा गुस्सा बाबू पर उतार किदया।

बाबू इस बात को कोई जवाब नहीं दे पाया है। क्षण भर सोचकर बोला- जब तक फाइल से भूत नहीं निकलेगा तब तक फाइल नहीं निपटेगी। क्योंकि फाइल तुम्हारी है अतः ले जाने के लिए खर्चा तुम्हें देना पड़ेगा।

कहकर बाबू ने अपनी बात रख दी। तब मोड़ीराम भी सोच में पड़ गया। वह कुछ बोले, तब चपरासी गणेशी आकर बोला-कुलकर्णी जी, साब आपको बुला रहे हैं।

शायद बाबू कुलकर्णी इसी प्रतीक्षा में थे बतः तत्काल साहब के केबिन में पहुंच गये। गणेशी ने मोड़ीराम को गौर से देखा,फिर पूछा-बाबू जी से क्या बात चल रही थी?

'वो कहते हैं कि मेरी फाइल को पड़े-पड़े भूत लग गया?'

'हां तो बाबू जी सही कहते हैं।'

'क्या खाक सही कहते हैं। तुम भी उनकी तरफ बोलोगे। आखिर घुटना घुटने की तरफ ही झकेगा।' नाराज होकर मोड़ीराम बोला-चक्कर पे चक्कर देते रहे। टाइम से मेरी फाइल नहीं निपटाई, इसका परिणाम यह हुआ कि फाइल को भूत लग गया। अब उसे निकालने के 2000/- रू मांग रहे हैं जबकि मैंने महीनों पहले फाइल दी थी। तब उसमें भूत नहीं लगा, अब भूत लग गया।

' बाबू के पास जो भी फाइल आती है, उसमें भूत लग जाता है।' समझाते हुए गणेशी बोला-जितना ज्यादा समय तक बाबू के पास फाइल रखोगे, भूत बहुत मुश्किल से उतरेगा- मेरा कहना मानो, बाबूजी ने भूत उतारने की जो राशि बताई है, उसे देकर फाइल से भूत भगा लो। सोचो मत, मैंने जो तरकीब बता दी, यदि इसके बाद भी नहीं समझो तो फिर काटो चक्कर।

कहकर चपरासी तो चला गया, मगर मोड़ीराम के मस्तिष्क में कई जलते हुए सवाल छोड़ गया। क्या करे, काटे चक्कर या ले देकर फाइल से भूत निकालकर भगा दें। चिंतन के घोड़े पर सवार होकर सोच रहा था, तभी बाबू आकर बोला, क्या सोच रहे हो?

'अब का सोचना, फाइल से भूत भगाना है' निराश होकर मोड़ीराम बोला।

' तो भगाओ' बाबू की आंखें हर्ष से चमक उठी। तब मोड़ीराम ने जरा भी नहीं सोचा और जेब से 500/- रू के चार नोट निकालकर बाबू की हथेली पर रख दिये और बोला-अब मेरी फाइल से भूत भाग जाना चााहिए।

'समझो भाग जायेगा।' प्रसन्नता से बाबू बोला।

' भाग जाने का मतलब?' जरा गुस्से से मोड़ीराम बोला।

'अरे भई, पैसों के आगे अच्छे भूत भाग जाते हैं। अब तुम्हारी फाइल का इलाज ऐसा करूंगा कि भूत कभी फाइल में घुसेगा ही नहीं।'

'फाइल लेने कब आऊं।'

' तीन दिन बाद लेने आना' कहकर बाबू ने मोड़ीराम को धन्यवाद दिया-और धन्यवाद दिया उस मंत्री को जिसने भूत संबंधी बात कहकर तहलका मचा दिया।

फाइलों में भूत बताकर उसे भी अब रिश्वत लेने का अचूक शस्त्र मिल गया।

- रमेश मनोहरा

क्यों

कितने ही अरमान उठ रहे मेरे दिल में
फिर भी क्यों मैं हूं गुमसुम, क्यों हूं यों चुप मैं?
दीख रहा है सारा मंजर बहुत सुहाना
फिर भी क्यों हो गया, दिल ए नाशाद भला मैं?
फहम ए कलाम हूं मैं भी कुछ इस दुनिया का
तब भी जब्त ए कलाम हूं क्यों इस कदर भला मैं?
कितने रहबर मिले मुझे मेरी राहों में
फिर भी मंजिल के करीब क्यों ठहर गया मैं?
घिरा भीड़ से यहां सर-ए-बाजार खड़ा मैं
फिर भी क्यों लग रहा खड़ा हूं उजलत में मैं
बाम ओ-दर मैं खुले हुए सारे सिम्तों के
फिर भी लगता है क्यों पड़ा कफस में हूं मैं?
चमक रही है मौज ए बर्फ बादलो में से
तब भी घिरा हुआ हूं क्यों अंधियारे से मैं
मेरे चारों ओर खड़े हैं मेरे हमदम
फिर भी सोज ए फिराक से क्यों घिरा हुआ मैं?

- बसंत लाल झा
जगदलपुर

जानते बूझते

हम आप जानते बूझते जहर खा रहे हैं
अपने परिवारों को भी खिला रहे हैं।
सब्जियां और फलों के उगाने में जो
रसायनिक कीटनाशक प्रयोग होते हैं
उनके अतिरिक्त सब्जियों और फलों को
चमकदार जहरीले रंगों से रंगा जाता है।
फलों को कृत्रिम ढंग से रसायन डालकर पकाया जाता है।
इंजेक्शन द्वारा अंदर दवाइयों से विभिन्न
फलों को रंग दिया और मीठा किया जाता है।
सब्जी के ठेले वाले सब्जियों को हराभरा
और ताजा दिखाने के लिए उन पर निरंतर
पानी छिड़कते रहते हैं और वह पानी
सड़क के किनारे गड्ढों में भरा काई लगा
गंदा मैला बदबूदार पानी ही अकसर होता है।
फल और सब्जियां ही नहीं पुराने सड़े हुए
सौंफ को हरा रंग कर बढ़िया बनाया जाता है।
सूची लंबी है अंतहीन है, चौकसी जरूरी है।

- ओमप्रकाश बजाज